अध्याय 16

हाजिरा और इश्माएल की कहानी

जैसे कि पहले उत्पत्ति 11:30 में, लेखक ने प्रकट किया कि सारा बांझ थी; फिर भी परमेश्वर ने अब्राहम को मूल आशीष की जो प्रतिज्ञा दी वह यह थी कि उसका भावी वंश "एक बड़ी जाति" बनेगा (12:2)। बार-बार परमेश्वर: ने कहा कि कुलपति के बहुत से वंशज होंगे और वे ईश्वरीय वरदान के रूप में कनान देश को प्राप्त करेंगे (12:7; 13:15, 16; 15:4-7)।

परमेश्वर: ने गोद लिए गए को प्रतिज्ञा के वंश के रूप में लेने से इनकार किया (15:2-4), उसने अब्राहम के साथ एक पवित्र वाचा की शपथ ली, और पुष्टि की कि प्रतिज्ञा के देश के वारिस कुलपति के "अपने ही शरीर" से जन्मे वंश होंगे (15:4, 5, 13-18)। सारा ने प्रतिज्ञा के पूरे करने में परमेश्वर: की सहायता करने का प्रयास किया, परन्तु उसकी योजना के कड़वे परिणाम हुए।

अब्राहम के परिवार में कलह (16:1-6)

[1]अब्राम की पत्नी सारै के कोई सन्तान न थी: और उसके हाजिरा नाम की एक मिस्री लौंडी थी। [2]सो सारै ने अब्राम से कहा, देख, यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द कर रखी है सो मैं तुझ से विनती करती हूं कि तू मेरी लौंडी के पास जा: सम्भव है कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए। [3]सो सारै की यह बात अब्राम ने मान ली। सो जब अब्राम को कनान देश में रहते दस वर्ष बीत चुके तब उसकी स्त्री सारै ने अपनी मिस्री लौंडी हाजिरा को ले कर अपने पति अब्राम को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो। [4]और वह हाजिरा के पास गया, और वह गर्भवती हुई और जब उसने जाना कि वह गर्भवती है तब वह अपनी स्वामिनी को अपनी दृष्टि में तुच्छ समझने लगी। [5]तब सारै ने अब्राम से कहा, जो मुझ पर उपद्रव हुआ सो तेरे ही सिर पर हो: मैं ने तो अपनी लौंडी को तेरी पत्नी कर दिया; पर जब उसने जाना कि वह गर्भवती है, तब वह मुझे तुच्छ समझने लगी, सो यहोवा मेरे और तेरे बीच में न्याय करे। [6]अब्राम ने सारै से कहा, देख तेरी लौंडी तेरे वश में है: जैसा तुझे भला लगे वैसा ही उसके साथ कर। सो सारै उसको दुख:ख देने लगी और वह उसके सामने से भाग गई।

आयत 1. अब्राहम ने स्पष्ट रूप से सारा अपनी पत्नी को ईश्वरीय प्रतिज्ञा को बताया था जो उससे की गई थी; परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया, उसने अपने

पति के लिए **कोई सन्तान पैदा नहीं की** थी। कभी सन्तान पैदा कर सकेगी यह सम्भावना उसे बहुत ही असंभव दिखाई देने लगी, क्योंकि वह पहले ही कम से कम पचहत्तर वर्ष की हो गई थी।[1] इस इतनी बड़ी आयु में, उसका मासिक धर्म होना बन्द हो गया था, इसलिए स्वाभाविक रूप से गर्भ धारण करने सारी आशाएँ जाती रहीं।

बाइबल के लेखक ने **सारा** को अब्राहम की **पत्नी** אִשָּׁה *(इशाह)* के रूप में वर्णन किया, पुराने नियम में "महिला" या "पत्नी" के लिए सबसे आम शब्द। आदम पहला व्यक्ति था जिसने पहली बार इसमें "पत्नी" के भाव को प्रयोग किया जब परमेश्वर हव्वा को उसके सामने लाया था (2:23)। इसके विपरीत, **हाजिरा, मिस्री** स्त्री, सारा की **दासी** שִׁפְחָה *(शिपखाह)* कहलाई। पुराना नियम में, इस शब्द का आमतौर पर अर्थ होता है गुलाम स्त्री जो विवाहित महिला की "नौकरानी"[2] होती थी। वह सम्भवतः फिरौन के घर में नौकरानी थी जिसे फिरौन ने मिस्र में अब्राहम को दिया था (12:16), और वह अब सारा की देखरेख के लिए व्यक्तिगत दासी के रूप में थी।

आयत 2. ज्यों-ज्यों उसके ऊपर दबाव बढ़ता गया, सन्तान पैदा न करने की अयोग्यता के लिए सारा **परमेश्वर** पर दोष लगाने लगी कि उसने उसकी **कोख को बन्द कर रखा है**। चाहे माने या न माने वह अपने इस आंकलन में सही थी, इसको जानने का कोई उपाय नहीं था। निस्संदेह, आज हम जानते हैं कि बहुत से शारीरिक और/या मानसिक कारण हैं जो किसी स्त्री को गर्भधारण करने से रोके रखते हैं। परन्तु, उत्पत्ति में एक अनोखी स्थिति पैदा हो गई जिसमें परमेश्वर ने स्त्रियों की कोख बन्द कर दी; तब अगले ईश्वरीय हस्तक्षेप होने तक गर्भधारण होना असम्भव हो गया था (20:17, 18; देखें 29:31; 30:2)। चाहे उनकी परिस्थितियों कैसी भी रही हो, सारा का बांझपन इस चुने हुए दम्पत्ति के लिए विश्वास की परख थी।

क्योंकि सारा अपने जीवन के इस पड़ाव पर, अपनी संतान होने की सम्भावना से साफ़ तौर पर निराश होने से, उसने अब्राहम को अपनी **दासी के पास जाने के लिए** यह कहकर याचना की, **"हो सकता है कि मैं उसके द्वारा सन्तान प्राप्त करूँ।"** यह कथन आज हमारे लिए बड़ा ही अनोखा सुनाई देता है; परन्तु अपने वंश को आगे चलाए रखने के लिए लड़के की महत्वता दी गई और पुराने समय में लज्जा का जो बोझ एक बांझ स्त्री पर था, सारा ने भी उसी तरह भरोसा कर लिया कि उसके पास और कोई उपाय नहीं है।

सारा के गर्भधारण की आशा जा चुकी थी, और उसके धैर्य का बांध भी टूट गया था। अब्राहम बहुत से वंशों का पिता कैसे बनेगा जो एक दिन प्रतिज्ञा किए हुए देश पर अधिकार करेंगे, यदि उसके कोई बच्चा ही नहीं हो तो? प्राचीन पूर्वी देशों में, प्रायः बहुविवाह का तर्काधार बांझ पत्नी या उससे वारिस लड़का पैदा न होना होता था। ऐसे मामलों में, पति को दूसरी पत्नी लाने की छूट होती थी,

परन्तु सर्वाधिक प्रचलन यह था कि पति के लिए दासी या नौकरानी जैसे हाजिरा थी से पुत्र हो जाता था।

मेसोपोटामिया की प्राचीन कानून व्यवस्था में जहाँ अब्राहम और सारा पैदा हुए थे उनके कनान में आने से 10 वर्ष पहले इस तरह का प्रावधान था। उदाहरण के लिए, नुज़ी से एक कथन जो 15वीं शताब्दी ईसा पूर्व का है, कहता है कि प्रख्यात परिवार से एक पत्नी जो सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती थी उसने एक उपाय किया लुल्लू से अपनी पति के लिए एक उपपत्नी को लिया (जहाँ से मनपसंद की कन्या दासियाँ मिल जाती थीं) कि वह उसके स्थान पर पति के लिए सन्तान उत्पन्न करे। उन दोनों के मेल से जो बच्चा होता था उसे पत्नी के बच्चे के रूप में ही लिया जाता था और विवाहित जीवन की वैध वंश के रूप में उसके सभी कानूनी अधिकार होते थे।[3]

हो सकता है सारा ने वही उपाय महसूस किया। वह निश्चित रूप से प्रतिरोधी पत्नी नहीं चाहती थी जो उसके साथ खड़ी होकर बराबरी का कानूनी अधिकार मांगे। इसलिए, सारा के मन में, न्यूनतम आपत्तिजनक उपाय था अब्राहम के साथ तर्क करे कि प्रतिज्ञा के बच्चे के लिए वह दासी हाजिरा को सरोगेट माँ होने के लिए ले ले।

जो भाषा यहाँ प्रयोग की गई है वह ध्यान देने योग्य है, कुलपति की उसकी पत्नी के प्रस्ताव के लिए गलत रास्ते पर चलने वाली प्रतिक्रिया का रूप वही शब्दावली है जैसे आदम ने अदन की वाटिका में हव्वा के प्रस्ताव का माना (3:17)।[4] विवरण यह बताता है कि **अब्राहम ने सारा की सुनी**, जो कि इब्रानी भाषा में कहने का तरीका यह है कि वह उसकी सलाह पर चला। एक भाव में, अब्राहम ने "मनुष्य के पतन" फिर से दोहरा दिया। परमेश्वर पर भरोसा करने और उसके वचन का अनुसरण करने की बजाए, उसने अपनी पत्नी की सुनी और उसी की बातों को माना, शोकजनक परिणामों के साथ।

आयत 3. प्रतिज्ञा के देश में एक दशक का समय व्यतीत करने के बाद और अभी भी पुत्र होने की कोई सम्भावना नहीं थी, सारा ने अपनी **मिस्री दासी हाजिरा को अपने पति की पत्नी के रूप में देने का निश्चय किया**। भले ही हाजिरा दासी *(पिलेगेश)* अब्राहम की पत्नी *(इशाह)* बन गई, वह दूसरे दर्जे की पत्नी ही रही; जबकि उसके पास कुछ कानूनी अधिकार भी थे, परन्तु उसका सारा के बराबर का दर्जा नहीं था। वह एक उपहार थी जो सारा ने अपने पति को दी थी, और अब्राहम उपहार प्राप्तकर्ता था; हाजिरा की उपपत्नी बनने में कोई इच्छा नहीं थी।

शेष पुराना नियम में, "उपपत्नी" פִּלֶגֶשׁ *(पिलेगेश)* और "पत्नी" אִשָּׁה *(इशाह)* की हमेशा से ही एक दूसरे से अलग पहचान रही है। परन्तु, उत्पत्ति के लेखक ने स्त्री को दर्शाने के लिए दोनों में उसी शब्द का प्रयोग किया है: हाजिरा (16:3; 25:6), कतूरा (25:1, 6) और बिल्हा (30:4; 35:22)। इस सूचना के आधार पर, विक्टर पी. हैमिल्टन ने अनुमान लगाया कि कुलपति के समय में यह

शब्दावली समानार्थक शब्द में रूप में प्रयोग की जाती थी और उपपत्नी विचाराधीन के लिए एक भी शब्दावली नहीं मिलती है।[5]

आयत 4. सारा की विनती के अनुसार करने से, अब्राहम **हाजिरा के पास गया** - अर्थात उसने उसके साथ सहवास किया। क्योंकि बाइबल अंश इस बात का संकेत नहीं करता है, यह सहवास मात्र इसी समय के लिए सीमित था। अब्राहम के घर में एक दासी थी जो मात्र सारा की दासी थी; और जब हाजिरा **गर्भवती** हुई, ऐसा दिखाई देता है कि सारा की योजना सफ़ल हो गई। परन्तु, यह सफ़लता सारा के लिए आनन्द लेकर नहीं आई। जब इस युवा स्त्री ने देखा कि वह गर्भवती है, उसने अपनी **स्वामिनी** को **तुच्छ** ("अपनी दृष्टि में तुच्छ समझने लगी"; NRSV) जाना। इससे सारा को जलन होने लगी, उसने हाजिरा को अपनी पदवी के लिए खतरे के रूप में देखा। निश्चित रूप से इसी कारण से परमेश्वर की इच्छा में बहुविवाह सुखकर नहीं है। आरम्भ में परमेश्वर ने आदम के लिए एक ही पत्नी को बनाया था (2:24)। बहुविवाह विवाहित जीवनों में होड़, असंतोष और अस्थिरता निश्चित रूप से बने रहते हैं (29:30, 31; 30:8; 35:22), और विनाशक कलह अब्राहम के घराने में भी साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा।

आयत 5. उसके प्रति हाजिरा के घमण्डी व्यवहार की प्रतिक्रिया में, सारा ने अब्राहम से कहा, "**जो मुझ पर उपद्रव हुआ सो तेरे ही सिर पर हो।**" इस दुख के लिए उसने एक बार फिर अब्राहम पर दोष लगाया परन्तु यह उसकी योजना के अनुसार ही था।[6] अपने क्रोध में, न सिर्फ़ उसने अपने पति को कठिनाइयों के लिए ज़िम्मेदार ठहराया बल्कि उसने हाजिरा के अक्खड़पन को "जो मुझ पर उपद्रव हुआ" कहकर व्यक्त किया। इब्रानी शब्द חָמָס *(ख़मास)* का अनुवाद "उपद्रव" किया है। जिन पापों से जल प्रलय आया उसी के उल्लेख के साथ, वही शब्द 6:11, 13 में "उपद्रव" लिया गया है। याकूब ने भी इसी शब्द का प्रयोग किया जब उसके पुत्रों ने 49:5 में शकेम के पुरुषों को घात किया था (देखें 34:25)। जबकि बाइबल अंश हमें इस तरह का कोई भी संकेत नहीं देता कि हाजिरा ने अपनी मालकिन के साथ कोई शारीरिक बल का प्रयोग किया हो, सारा ने उसके व्यवहार को उपद्रव और घृणा के रूप में व्याख्यान किया और उसने उसके विरुद्ध आरोप लगाए।

हाजिरा का सारा के प्रति अपमान इसका अर्थ है कि उसने स्वयं को अपनी मालकिन के बराबर देखा, क्योंकि वह अपने मालिक को उसका वारिस देने जा रही थी, जो कि सारा न दे सकी थी। यदि यही मामला था तो, हाजिरा वास्तव में ही बहुत दूर निकल गई थी। प्राचीन नियम व्यवस्था ने उपपत्नी के ऐसे व्यवहार से पहली पत्नी की सुरक्षा की है। हम्मुरबी का नियम एक पहली पत्नी का उल्लेख करता है जिसने दासी के द्वारा बच्चे पैदा होने के लिए उसे अपने पति को दे दिया। वह बताता है, "यदि बाद में वह दासी अपनी मालकिन की बराबरी का दावा करती है क्योंकि उसने बच्चे पैदा किए है, उसकी मालकिन उस दासी को

बेचेगी नहीं; उस पर अपनी दासी होने का चिन्ह करेगी और वह दासी मानी जाएगी।"[7] नीतिवचन 30:23 चार प्रकार के व्यवहार की सूची देता है जिसे संसार सहन नहीं कर सकता और उनमें से एक है "दासी का अपनी स्वामिनी की वारिस होना।"

सारा ने समर्थन के लिए उच्च न्यायालय को यह कहते हुए पुकारा, "**सो यहोवा मेरे और तेरे बीच में न्याय करे।**" ऐसा दिखाई देता है कि वह परमेश्वर को पुकार रही है कि उसका पति ईश्वरीय न्याय के लिए प्रत्युत्तर दे और इस दासी से उसका अधिकार दिलवाए, उसके इस अहंकार का अन्त करें। यह शिकायत उसके और अब्राहम के बीच न्याय करने के लिए परमेश्वर से विनती भी थी।

आयत 6. जब हाजिरा ने अपनी पूर्व मालकिन के सामने श्रेष्ठता का व्यवहार प्रकट किया, अब्राहम ने उस पर से अपने वैध अधिकार को छोड़ दिया और सारा से कहा, **"देख तेरी लौंडी तेरे वश में है: जैसा तुझे भला** [טוֹב, *तोब]* **लगे वैसा ही उसके साथ कर।"** अपनी पत्नी को यह कोमल उत्तर देने के द्वारा, कुलपति ने प्रत्यक्ष रूप से यह आशा की थी कि सारा हाजिरा के साथ सख्ती का व्यवहार न करे, परन्तु इसके बजाए वह उसके साथ दया करे और उसके साथ भला व्यवहार करे। परन्तु यह तो एक झूठी आशा ही प्रमाणित हुई; इसके बजाए, **सारा उसे दुख देने लगी**। इस शब्द का मुख्य अर्थ जो उसने हाजिरा को दुख दिया, עָנָה *(अनाह)* वास्तव में "ज़बरदस्ती करना" या "दण्ड देना या प्रताड़ित करना" है।[8] उसी शब्दावली का प्रयोग मिस्रियों के लिए किया गया जब इस्राएली गुलामी में थे (निर्गमन 1:11, 12)। वास्तव में दुख देने का रूप क्या था वह अज्ञात है, परन्तु सारा ने हाजिरा के साथ इतना बुरा व्यवहार किया कि वह बिना सोचे **उसके पास** जंगल में **भाग गई**, अपनी जन्म भूमि मिस्र देश की ओर (16:1, 7)।

इश्माएल का जन्म (16:7-16)

[7]तब यहोवा के दूत ने उसको जंगल में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाकर कहा, [8]"सारै की लौंडी हाजिरा, तू कहां से आती और कहां को जाती है?" उसने कहा, "मैं अपनी स्वामिनी सारै के सामने से भाग आई हूं।" [9]यहोवा के दूत ने उससे कहा, अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह। [10]और यहोवा के दूत ने उससे कहा, मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा, यहां तक कि बहुतायत के कारण उसकी गणना न हो सकेगी। [11]और यहोवा के दूत ने उससे कहा, "देख तू गर्भवती है, और पुत्र जनेगी, सो उसका नाम इश्माएल रखना; क्योंकि यहोवा ने तेरे दुख:ख का हाल सुन लिया है। [12]और वह मनुष्य बनैले गदहे के समान होगा उसका हाथ सबके विरुद्ध उठेगा, और सब के हाथ उसके विरुद्ध उठेंगे; और वह अपने सब भाई बन्धुओं के मध्य में बसा रहेगा।" [13]तब उसने यहोवा का नाम जिसने उससे बातें की थीं, अत्ताएलरोई रखकर कहा कि, क्या मैं यहां भी उसको जाते हुए देखने पाई जो मेरा देखने हारा है? [14]इस कारण उस कुएं का नाम लहैरोई कुआं पड़ा; वह तो कादेश और बेरेद के बीच में है। [15]सो

हाजिरा अब्राम के द्वारा एक पुत्र जनी: और अब्राम ने अपने पुत्र का नाम, जिसे हाजिरा जनी, इश्माएल रखा। 16जब हाजिरा ने अब्राम के द्वारा इश्माएल को जन्म दिया उस समय अब्राम छियासी वर्ष का था।

आयत 7. जैसे ही हाजिरा सारा के क्रोध से भाग रही थी, कथाकार बताता है कि **यहोवा के दूत ने उसको जंगल में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाया**। वाक्य "यहोवा का दूत" पुराना नियम में इसका अठ्ठावन बार प्रयोग हुआ है। कभी-कभी इसे परमेश्वर के व्यक्तिगत प्रतिनिधि के रूप में धरती पर स्वर्गिक प्राणी भेजने का उल्लेख मिलता है। प्राचीन काल के पूर्व देशों में, राजकीय संदेशवाहक को राजा के प्रतिनिधि के रूप में समझा जाता था। यहोवा का "दूत" מַלְאַךְ *(मलाक,* "दूत") पवित्र शास्त्र में आमतौर पर ऐसे प्रकट होता है जैसे मनुष्य परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर रहा हो, परमेश्वर के लिए बोल रहा हो और परमेश्वर की कुछ महिमा को प्रकट कर रहा हो।

परन्तु, "यहोवा का दूत" को बाइबल की कहानियों में प्रायः परमेश्वर कहा गया है और वह परमेश्वर जैसा प्रकट हुआ है। जिन्होंने इस तरह के अनोखे दृश्य को देखा है उन्होंने परमेश्वर को देखा।[9] यहोवा का दूत, तब, परमेश्वर के प्रकटीकरण अर्थात उसके दर्शन के विषय में हो सकता होगा। वह कभी-कभी प्रकटीकरण मानवीय रूप लेता था और कभी-कभी लोगों ने उसकी महिमा आग के रूप में देखी, और उन्होंने उसे परमेश्वर माना।

हाजिरा अनोखी तरह से आशीषित हुई कि यहोवा के दूत ने उसको जंगल में **शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाया**। שׁוּר *(शूर)* नाम का अर्थ है "दीवार" (49:22; अय्यूब 24:11), और सम्भवतः यह किलों की पंक्ति का उल्लेख करता है जो कि मिस्र देश की पूर्व की ओर से एशियाई घेराव से सुरक्षा करती है (25:18; 1 शमूएल 15:7)। हाजिरा ने सीनै के जंगल को अकेली पार करने का प्रयास किया यह उसकी मूर्खता थी, क्योंकि पानी की बहुत ही किल्लत थी और कनान और मिस्र के बीच के सैकड़ों मील की यात्रा में भोजन का अभाव था।

आयत 8. जब यहोवा का दूत **हाजिरा** से मिला, वह पहले ही से जानता था कि वह **सारा की दासी** है; और उसके भागने की परिस्थितियों को जानता था। इसलिए उसने दोहरा प्रश्न किया **"तू कहाँ से आती है और कहाँ को जाती है?"** यह आलंकारिक प्रश्न था। यह उससे अब्राहम के घराने को छोड़ने की परिस्थितियों पर फिर से विचार करने के लिए पूछा गया था। हाजिरा ने बड़ी निष्ठा से उत्तर दिया, **"मैं अपनी स्वामिनी सारै के सामने से भाग आई हूं।"**

आयत 9. इस बात पर, **दूत** ने **उसे** निर्देश दिया, **"अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह।"** अपने आपको विनम्र करना और सारा के वश में फिर से जाकर रहना हाजिरा के लिए यह अरुचिकर होगा, परन्तु निर्जन जंगल में प्रतीक्षा कर रही मृत्यु से यह करना श्रेष्ठ था।

आयत 10. दूत ने प्रकट किया कि **यहोवा तेरे वंश को बहुत बढ़ाएगा**, यहां तक कि बहुतायत के कारण उसकी गणना न हो सकेगी। जबकि परमेश्वर ने अब्राहम के साथ भी वैसी ही प्रतिज्ञा की थी (13:16; 15:5), उत्पत्ति की पुस्तक में हाजिरा ही ऐसी मात्र स्त्री है जिससे परमेश्वर ने आमने सामने इस तरह की प्रतिज्ञा की। प्राचीन समयों में बड़ी संख्या में गर्भपात और बच्चों की मृत्यु को देखते हुए, यह ईश्वरीय प्रतिज्ञा थी कि उसे एक स्वस्थ बच्चा होगा उसकी आत्मा में असंख्य वंश उठ रहे होंगे और उसे कनान वापिस जाने का समाधान प्रदान किया।

आयत 11. दूत ने हाजिरा से फिर बात की, उसे बताया कि वह जानता है कि हाजिरा गर्भवती थी। तब दूत ने उसे यह बताया कि उसके **पुत्र होगा**। इन वचनों ने उसे प्रमाण दिया कि जो अनोखा व्यक्ति उसके सामने प्रकट हुआ वह छलावा नहीं था जो मरुभूमि में तपती दोपहर को नज़र आता हो। वह जानती थी कि यह परमेश्वर की ओर से दर्शन था, क्योंकि वही एक है जो एक अजन्मे **बच्चे** का लिंग जान सकता है। कम से कम, वह वारिस जिसकी अब्राहम से प्रतिज्ञा की गई थी वह पूरी होती हुई दिखाई देने लगी, जब वह छियासी वर्ष का था (16:16); हाजिरा ने सोचा कि दत्तक माँ की उसकी भूमिका का सफ़ल होना निश्चित हो गया था।

इसके साथ ही साथ, दूत ने हाजिरा पर प्रकट किया कि बच्चे का **नाम इश्माएल** होगा। उसने इसके लिए कारण दिया, "**क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख का हाल सुन लिया है।**" नाम "इश्माएल" יִשְׁמָעֵאל *(इश्माएल) का अर्थ है* "परमेश्वर सुनता है" या "परमेश्वर ने सुन लिया है।" इब्रानी शब्दों का एक सामान्य प्ररूप है, यहाँ यह संकेत है कि परमेश्वर ने हाजिरा के दुखों को देख लिया, अर्थात, उसकी मालकिन सारा ने जो उसके साथ बुरा व्यवहार किया था।

आयत 12. बच्चे का स्वभाव, चरित्र और नियति जैसे हाजिरा को बताई गई, किसी भी माता की इच्छा से यह बहुत भिन्न होगी। दूत के अनुसार वह मनुष्य **बनैले गदहे के समान होगा उसका हाथ सबके विरुद्ध उठेगा**, और सब के हाथ उसके विरूद्ध उठेंगे। शब्दावली פֶּרֶא *(पेरे)*, जिसका अर्थ है "बनैला गदहा" (यिर्म. 2:24; होशे 8:9), इश्माएल के सम्बन्ध में यह आलंकारिक रूप से प्रयोग की गई है; वह जंगल में रहते हुए "मुक्त घुमंतू"[10] होगा। यहाँ जो जानवर पहचान में आता दिखाई दे रहा है वह गदहे की बजाए घोड़ा है, परन्तु यह पालतू होने का विरोध करता है (अय्यूब 39:5-8)। इश्माएल जंगली मनुष्य होगा, संस्कृति और सामाजिक परंपराओं का विरोध करने वाला। वह अभिमानी, विद्रोही स्वभाव का होगा और समाज के साथ निर्वाह करने से इनकार करेगा। वह हर एक का विरोधी बनकर रहेगा, उनके साथ रहने से इनकार करेगा हर कोई उसी तरह से उसको देखेंगे।

इस कारण से, इश्माएल को **अपने सभी भाइयों से पूर्व दिशा में बसना था**, अर्थात कनान की पूर्वी भूमि, जो अरबी रेगिस्तान के किनारे-किनारे थी उस पर

अधिकार करना था। यह भविष्यवाणी बाद के इश्माएली काफिलों पर भी लागू होगी जो मेसोपोटामिया के भयानक रेगिस्तान को पार करके मिस्र देश में आते थे, और कभी-कभी मानव तस्करी करते थे (37:25-28; 39:1)। अन्य इश्माएली, अपने भिन्न-भिन्न खानाबदोशी समूहों में धावा बोला करते और लूटमार करते थे, और फिर वे कनान में स्थाई तौर पर बस गए थे (न्यायियों 7:12; 8:24)। परन्तु इब्रानी अंश भिन्न रूप से अनुवाद होगा। भाव "मध्य में" עַל-פְּנֵי *(अल्पेनी)* से है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "उनके विरुद्ध" एन आई वी अनुवाद कहता है कि "वह अपने भाइयों के साथ *बैर रखेगा"* (ज़ोर दिया गया है)। यह अनुवाद पहले के 16:12 के साथ मेल खाता है। इसके अतिरिक्त, यह बताता है कि यह नबूवत 25:18 में इस तरह पूरी हुई "वह अपने भाइयों के *बीच में चुनौती* के साथ बसा" (ज़ोर दिया गया है)।[11]

आयत 13. इस ईश्वरीय मिलन के द्वारा, हाजिरा परमेश्वर को यहोवा के रूप में पहचान गई जो सुनता (16:11) और देखता है; उसने उसको दुख और निराशा में सुना और देखा। उसने सम्भवतः अब्राहम को "यहोवा" अपने परमेश्वर के विषय कहते हुए सुना होगा; जब दूत ने उसी शब्दावली का प्रयोग किया (יהוה, "यहोवा"; 16:11), **हाजिरा ने परमेश्वर यहोवा के नाम को पुकारा जिसने उससे बात की थी**। हाजिरा ने कहा, **"तुम परमेश्वर हो जो देखता है।"** भले ही इब्रानी मूल शब्द को समझना कठिन है, उसका अगला कथन सम्भवतः मात्र अंगीकार नहीं है उसने परमेश्वर को देखा, जैसा, एन आई वी में प्रस्तुत किया गया है। अपने आश्चर्य में उसने कहा, **"उसको देखने के बाद क्या मैं जीवित रहूँगी?"**[12] जिनका परमेश्वर के साथ सामना हुआ या उसके ईश्वरीय प्रतिरूप को देखा उन पर मृत्यु का भय समा गया था; उन्होंने परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में अपनी चरम पापी अवस्था को देखा (32:30; न्यायियों 6:22, 23; 13:22; यशा. 6:5; देखें निर्गमन 33:20)।

आयत 14. उसके बाद लेखक **कुएँ** का नाम **लहैरोई** बताता है, जो कि **कादेश और बेरेद के बीच है**। इस नाम का अर्थ कुछ इस तरह से है "उस जीविते का कुआँ जो मुझे देखता है।"[13] "कादेश" नेगेव (दक्षिणी कनान) और सीन के जंगल की सीमा के मध्य था (देखें गिनती 13:21, 26), परन्तु "बीर-लहैरोई" और "बेरेद" के स्थान-निरूप अनिश्चित हैं। बीर-लैरोई नेगेव में पानी का स्थान था जहाँ इसहाक ने कुछ समय वास किया था (24:62; 25:11)।

आयत 15. जंगल में हाजिरा के अनुभव के बाद - जिसमें सारा के पास वापिस आने के लिए दूत का प्रोत्साहन भी शामिल है और पुत्र की प्रतिज्ञा और अब्राहम की मिस्री - उपपत्नी से बहुत से वंश यह सब उसे अब्राहम के घर में वापिस ले आए। जब समय आया, **हाजिरा ने अब्राहम के पुत्र को जन्म दिया**, जैसा दूत ने कहा था। दूत के द्वारा अब्राहम को दिए गए संदेश में उसे कुछ भी शंका नहीं थी (16:11), उसने **उसके पुत्र को नाम दिया था**, **इश्माएल**, जिसे

हाजिरा ने जन्म दिया था। लड़के का नाम रखने के द्वारा अब्राहम ने उसे अपने पुत्र और वैध वारिस के रूप में स्वीकार किया।[14]

आयत 16. दासी का पुत्र अपने पिता का पहला वारिस नहीं होगा यदि बाद में सारा के द्वारा अब्राहम को पुत्र मिलना था, इस तरह की घटना मानवीय सम्भावनाओं के दायरे से परे की बात है। जब **हाजिरा** से **इश्माएल** का जन्म हुआ तब अब्राहम **छियासी वर्ष** का था और सारा छिहत्तर वर्ष की थी।

अनुप्रयोग

जब घूम कर जाना होता है (अध्याय 16)

बहुत से लोगों को इस अनुभव के साथ यात्रा करनी पड़ी कि अचानक ही उनके सामने एक बोर्ड आ गया जिसके लिखा "घूम कर जाएँ।" इसमें आमतौर पर सड़क के पास एक घुमाव जुड़ा होता है जो आशाजनक तो दिखाई नहीं देता, फिर भी घूम कर जाने का चिन्ह यह विश्वास उत्पन्न करने के लिए होता है कि यह वैकल्पिक सड़क मूल स्थान की ओर ले जाएगी। मीलों मील खराब सड़क पर चलने के बाद, गाड़ी को मोड़ने वाले व्यक्ति के मन में चिन्ह के विषय प्रश्न उठ सकता है। वे सोचते हैं कि हम भटक गए हैं और किसी न किसी व्यक्ति को उनकी दुर्दशा के लिए दोष देना चाहते हैं। लम्बे घुमावदार पथ पर चलना एक कष्टकर अनुभव हो सकता है।

उत्पत्ति 16 में, अब्राहम, सारा और हाजिरा ने अपने जीवन में एक घुमावदार पथ लिया, और गलत पथ पर हो लिए, पहली दृष्टि में तो यह उनको सही दिखाई देता था। उनकी समस्या के समाधान को लाने की बजाए, सारा के द्वारा लिए गए वैकल्पिक मार्ग ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा होने में अतिरिक्त समस्याएँ पैदा कर दीं और उनके घर में कलह होने लगे। इससे सम्बन्धित सभी का विनाश में अन्त हो सकता था। बाइबल की इस घटना में, मानवीय तर्क पर भरोसा करने का खतरा स्पष्ट हो जाता है; इस कुलपति के परिवार के सामने रखे परमेश्वर के विश्वास के आचरण के विपरीत यह जीवनशैली प्रस्तुत हुई है। परमेश्वर आज भी अपने लोगों को विश्वास से चलने की चुनौती का सामना करने के लिए बुलाता है। यह अध्याय इस बात पर बल देता है कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा होने की प्रतीक्षा में विश्वास धैर्य को काम में लाता है; और यह हमें स्मरण करवाता है कि परमेश्वर की अपनी समय सारणी है, जो कि हमारी समय सारणी से पुर्णतः अलग हो सकती है।

उपयुक्त दिखाई देने वाला पथ लेना। सच्चा विश्वास परमेश्वर की प्रतीक्षा करने को काम में लाता है इसके बजाए कि किसी अलग पथ को ले लें जो उस समय उपयुक्त दिखाई देता हो। कई दशकों से अब्राहम और सारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरा होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम मात्र इतना ही अनुमान लगा सकते हैं कि जब से ऊर में परमेश्वर द्वारा पहली बुलाहट हुई (11:31; 15:7; प्रेरितों को काम 7:2, 3) तब से लेकर उन वर्षों की संख्या जो अपने देश के विषय जानने

से पहले उन्होंने हारान में व्यतीत किए थे कितनी रही होगी (12:1-3; प्रेरितों 7:4)। अब वे पिछले दस वर्षों से कनान देश में रह रहे थे (16:3); अब्राहम इस समय पचासी वर्ष का और सारा पचहत्तर वर्ष की थी (देखें 12:4; 17:17)। अभी भी वे निःसंतान ही थे। एलीएज़ेर सम्भावित वारिस के रूप में हटा दिया गया था, जब से परमेश्वर ने वारिस की - प्रतिज्ञा दी थी अर्थात जिसके द्वारा पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाने वाली थीं - वह अब्राहम की "अपनी देह से ही होगा" (15:4)।

सम्भव रूप से सारा के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा कैसे पूरी हो सकेगी जो वृद्ध हो गई थी और बांझ थी? सारा ने प्राचीन मेसोपोटामिया की व्यवस्थाओं और प्रथाओं में अपना समाधान ढूँढा, जहाँ से अपनी यात्रा आरम्भ की थी। सारा ने प्रस्ताव रखा कि अब्राहम उसकी दासी हाजिरा को ले ले, और उससे सन्तान प्राप्त करे; तब वह उस बच्चे को अपनी ही सन्तान के रूप में स्वीकार करेगी। इस बात पर उसने स्पष्ट रूप से भरोसा कर लिया, लम्बे समय से चली आ रही उसकी गर्भधारण की अयोग्यता का समाधान हो जाएगा, जिसके लिए उसने परमेश्वर को यह कहते हुए दोषी ठहराया उसने मेरी कोख को बन्द कर रखा है (16:2)। यह सब तार्किक और व्यावहारिक दिखाई देता था, परन्तु न सारा ने और न ही अब्राहम ने यह सोचा होगा कि इस तरह की योजना समस्याएँ खड़ी कर देगी।

प्रतीक्षा करना कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम चाहते हों, परन्तु परमेश्वर ने हमेशा ही लोगों को विश्वास करने के लिए आह्वान दिया है। सच्चा विश्वास हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पूरा होने तक धैर्य से प्रतीक्षा करने के लिए सक्षम करता है।

मूसा, कालेब और यहोशू को जंगल में 40 वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ी इससे पहले कि परमेश्वर ने इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने दिया (गिनती 13:17-14:45)। परन्तु फिर भी मूसा को मात्र देश को देखने की अनुमति हुई; वह देश में प्रवेश नहीं कर सका (व्यव. 32:48-52; 34:1-8)।

परमेश्वर ने हबक्कूक को विश्वास के द्वारा उस ईश्वरीय दण्ड की प्रतीक्षा करने के लिए बुलाया था, जो उस दुष्ट बेबीलोन पर आने वाला था जो यहूदा और यरूशलेम पर कहर बरसा रहा था (हबक्कूक 2:2-4)। जबकि बेबीलोन का पतन भविष्य में लगभग 70 वर्षों के बाद होने वाला था, नबी भी इसे देखने के लिए जीवित नहीं रहेगा (हबक्कूक 3:16-19; यिर्म. 29:7-14)।

यशायाह ने बेबीलोन में यहूदियों को आशा न छोड़ने के लिए उत्साहित किया, मानो परमेश्वर उन्हें इस दूर देश में भूल गया था। उसने उन्हें विश्वास को नया करने के लिए बुलाया जो "बाट जोहना" (आशा में) होगा उनकी बंधुआई से परमेश्वर का छुटकारा मिलने के लिए (यशा. 40:1-31)।

नए नियम में, पौलुस ने मसीही जीवन की पीड़ा की बीच में कराहने के अनुभव के रूप में उल्लेख किया जबकि हम अपनी देहों के छुटकारे के लिए धैर्य

से प्रतीक्षा करते हैं (रोमियों 8:18-25)। इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है कि "विश्वास और धैर्य के द्वारा ही [हम] प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं" (इब्रा. 6:12)।

परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को पुत्र देने में इतनी प्रतीक्षा क्यों की? वह चाहता था कि वे शारीरिक रूप से "मरे हुए से हो जाए" (इब्रा. 11:12), ताकि मात्र परमेश्वर को ही महिमा मिले (रोमियों 4:20)। उनको और आने वाली सभी पीढ़ियों को विश्वास करने की ज़रूरत है कि "परमेश्वर के लिए कुछ भी कठिन नहीं" (18:14)। परमेश्वर का पथ - विश्वास का पथ है - वह पथ जिसे हमें चलना है, भले ही यह पथ हमें समय-समय पर लम्बा और कठिन दिखाई दे।

विश्वास के स्थान पर मानवीय तर्क को रखना। सारा जानती थी कि सन्तान उत्पन्न करने की उसकी आयु निकल चुकी है, परन्तु वह यह सोचती थी कि उसका पति अभी भी सन्तान उत्पन्न करने के सक्षम है। वह इस बात से अवगत थी कि परमेश्वर ने अब्राहम को नामित उत्तराधिकारी के पिता के रूप में पहचाना था (15:4), परन्तु परमेश्वर ने अभी माँ की पहचान को प्रकट नहीं किया है। स्वाभाविक बात है, कई वर्षों तक वह भरोसा करती रही कि वह सन्तान को जन्म देगी; परन्तु अब तो सन्तान उत्पन्न करने के उचित समय को पार कर गई थी, सारा ने अब्राहम को उत्तराधिकारी देने के लिए तार्किक उपाय अपने पति को अपनी दासी हाजिरा देने के लिए सोचा, ताकि उनके मेल से जो बच्चा जन्म ले वह उत्तराधिकारी के रूप में जाना जाए।

विश्वास और तर्क के बीच का टकराव ऐसा नहीं है जो आधुनिक समय में आ चुका है; यह उतना ही पुराना है जितना मानवीय स्वभाव। सारा परमेश्वर का "पूर्वानुमान लगा" रही थी। उसने कल्पना कर ली कि उसकी योजना न सिर्फ़ उचित ही है परन्तु यह एक ही उपलब्ध उपाय है जिससे परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा सकेगा। वह, अन्य भाव से देखा जाए तो इस कठिन स्थिति से निकलने के लिए परमेश्वर की सहायता करने का प्रयास कर रही थी। मनुष्य जाति के लिए यह हमेशा ही खतरा रहा है कि वह परमेश्वर से बाहर सोचने का प्रयास करे। सच्चा विश्वास परमेश्वर के वचन पर आधारित होता है (रोमियों 10:17), परन्तु सारा परमेश्वर को पछाड़ रही थी और एक ऐसी योजना बना रही थी जो उसको सही दिखाई देती थी (नीति. 14:12)। "यदि यहोवा का दूत" वहाँ हस्तक्षेप न करता तो हाजिरा और अजन्मे बच्चे की जंगल की प्रचंड गर्मी से मृत्यु हो गई होती (16:7)।

इस घटना में, सारा का मुख्य लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की महिमा करना नहीं था, परन्तु उसकी कोख बन्द करने के लिए उसे दोष देना था (16:2)। शैतान उसके कान में यह फुसफुसा रहा होगा, "परमेश्वर के हृदय में तुम्हारे लिए कोई भलाई की बात नहीं है! यदि वह सच में तुमसे प्यार करता होता तो इतना समय बीत गया अब तक तो उसने तुम्हें अब्राहम के पुत्र के माँ बना दिया होता" (देखें 3:1-6)। परमेश्वर के लोगों की तरह, यदि परमेश्वर हमारे मन के अनुसार

जिसे हम समयोचित रीति मानते हैं हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर न दे तो हम भी उसी जाल में फँस सकते हैं।

शैतान ने यीशु को आसान तरीके से मसीह बनने का प्रलोभन दिया था। अपनी सामर्थ को दिखाना दुख उठाने से कहीं अधिक उचित दिखाई देता था। चालीस दिन तक उपवास करने के बाद, कुछ पत्थरों को रोटी में बदलने से क्या नुकसान हो सकता है? उसी तरह से, शैतान ने परमेश्वर के पुत्र को मसीह के रूप में स्वीकार करने के लिए परमेश्वर की इच्छा का शोषण करने का प्रयास किया। यदि यीशु ने स्वयं को मन्दिर की शिखर से गिरा दिया होता और भीड़ ने दूतों के द्वारा उसके बचाव को देखा होता तो क्या वह उसे उसी घड़ी मसीह न स्वीकार कर लेते? ऐसा हो सकता था, परन्तु बिना क्रूसित मसीह के यह संसार पापों के बदले उसकी मृत्यु के द्वारा प्रायश्चित किए जाने से वंचित रह जाता (1 यूहन्ना 2:2)। यीशु ने शैतान के तरीके को अस्वीकृत कर दिया, यहाँ तक वह उचित दिखाई देता था, क्योंकि वह मानव जाति को सनातन के लिए भटका हुआ और आशा रहित नहीं छोड़ना चाहता था (1 कुरि. 15:1-4, 16-19)।

कलह की ओर पथ। विश्वास का आत्मिक घुमाव प्रायः पारिवारिक कलह की ओर ले जाता है। जब परमेश्वर के लोग संसार की बुद्धि पर चलते हैं, यह प्रायः "जलन," "स्वार्थी महत्वाकांक्षा," और "गड़बड़ी" की ओर ले जाती है (याकूब 3:13-18)। ठीक यही कुछ अब्राहम के परिवार में लोक विदित हो गया। पारिवारिक झगड़े समाधान करने के लिए बहुत पीड़ादायी और कठिन होते हैं। जब सारा ने हाजिरा अब्राहम को उपपत्नी के रूप में दे दी, उसने इस बात पर विचार नहीं किया कि यह निर्णय उसके परिवार की शान्ति और एकता के लिए कितना घातक सिद्ध होगा।

जब पौलुस ने गलातियों के मसीहियों को पत्र लिखा, उसने उनसे पूछा, "क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?" (गला. 3:3)। परमेश्वर वही प्रश्न अब्राहम और सारा से पूछ सकता था। उन्होंने कई वर्ष पहले परमेश्वर के साथ विश्वास से आत्मिक आचरण का आरम्भ किया था; परन्तु अब वह एक घुमाव बना रहे थे, बांझपन की अपनी परेशानी के समाधान के लिए शारीरिक घुमाव ले रहे थे। अपनी समस्या को सुलझाने की बजाए, परमेश्वर की योजना को सुधारने के प्रयास में समस्या को मात्र बढ़ा रहे थे। लगभग जैसे ही उन्होंने सारा की योजना को लागू किया, शरीर का काम - "कलह," "जलन," "क्रोध" (गला. 5:19, 20) यह सब अब्राहम के परिवार के लिए संकट लाने लगे।

बाइबल विवरण ऐसा संकेत देता हुआ दिखाई देता है कि हाजिरा अब्राहम से तत्काल ही गर्भवती हो गई थी (16:3, 4); और ज्यों ही यह बात स्पष्ट हो गई, जवान दासी अभिमानी हो गई और सारा का अपमान करने लगी (16:4)। उसने स्वयं को सारा के बराबर या ऐसा कार्य किया कि मानो उसका स्तर उसकी मालकिन से बड़ा हो गया जो उसकी मालकिन का था (देखें नीति. 30:23)।

चोटिल और गुस्से से, सारा ने अपने दुख के लिए अब्राहम का दोषी ठहराया। उसने अपने से बड़े अपराध के रूप में अब्राहम के अपराध के लिए परमेश्वर से न्याय की विनती की (16:5)। इसके साथ, कुलपति ने हाजिरा को वापिस सारा के अधिकार में दे दिया; परन्तु फिर सारा ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया और उसका जीवन इतना दुखी कर दिया कि वह मिस्री स्त्री जंगल की ओर भाग गई (16:6)।

इस दुखद घटना में सभी सहभागी गलती पर थे, जिसने इस घराने को नष्ट भ्रष्ट कर दिया और यही बात प्रायः विवाहित जीवनों, परिवारों, और यहाँ तक कि कलीसियाओं में होती है। प्रायः, अप्रिय बातों से बचने के लिए ऐसे बहुत सारे दोष होते हैं, और क्रोध और आरोप लगाने से समस्या का समाधान या शान्ति वापिस नहीं आती जहाँ पर दरार पड़ जाती है। इस तरह की स्थितियों में शान्ति होने के लिए परस्पर पाप के अंगीकार की ज़रूरत होती है, एक दूसरे को क्षमा करने की इच्छा, और एक दूसरे से और परमेश्वर से भी क्षमा मांगने में निष्कपटता की ज़रूरत होती है (देखें मत्ती 6:12-15; इफि. 4:29-32; कुलु. 3:12-15)।

यूसुफ के लिए याकूब का पक्षपात इस परिवार की स्थिति को चित्रित करता है। तथ्य यह कि यूसुफ़ अपने पिता का चहेता था उसे अपने भाइयों में स्वयं की बड़ाई करने का उत्साह मिला। इसके बदले उन्होंने उससे घृणा की और उसे घात करने का विचार किया; घात करने की बजाए उसे मिस्र में दास होने के लिए बेच दिया और फिर अपने पिता से झूठ बोला, और दावा किया कि उसे किसी जंगली जानवर ने खा लिया (37:1-36)। बहुत वर्षों के बाद, मिस्र में, यूसुफ़ के पास अवसर था कि अपने भाइयों से बदला ले; परन्तु जब उसे इस बात का विश्वास हो गया कि उन्होंने जो किया था उसके लिए उन्हें बहुत दुख था, तो उसने उनको क्षमा कर दिया और उन्हें उनके पिता के पास भेज दिया, इस तरह से वे फिर से एक परिवार बन गए (45:1-28)।

मुसीबत की ओर पथ। आत्मिक घुमाव जो लोगों को भटका देता है खतरनाक हो सकता है, जब तक कि वे परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ते। समस्याओं से भागने से कभी भी सच्चा समाधान नहीं मिलता, फिर भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस दृष्टिकोण का लगातार प्रयास करते हैं, कठिनाइयों से बचने का प्रयास करते हैं इसके बजाए कि वे इनका सामना करें। अपनी मालकिन की तरह उनके कलह में हाजिरा भी गलती पर थी। वह इतनी अभिमानी हो गई थी कि सारा ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया और उसका जीवन असहनीय कर दिया था। उसे क्या करना था उसे स्वयं को दीन करना था और अब्राहम के घर में लौट आना था, अपने पापों का अंगीकार करती और मालकिन से क्षमा मांगती। निश्चित रूप से यही वह कार्य था जिसे दूत ने उसे करने का आदेश दिया था। यदि हाजिरा घर वापिस आ गई और सच्चे बदले हुए व्यवहार को दर्शाया तो अब से उसके साथ सख्ती का व्यवहार नहीं होगा।

इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर को माता और अजन्मे बच्चे की शारीरिक भलाई की चिन्ता थी, परन्तु परमेश्वर आत्मिक दरार को भी भरना चाहता था जिसने अब्राहम के घर में फूट डाल रखी थी। इस ईश्वरीय संदेश ने हाजिरा को न सिर्फ़ बुरे व्यवहार के स्थान पर स्वीकार किए जाने की आशा ही दी परन्तु उसे यह प्रतिज्ञा दी कि वह एक पुत्र को जन्म देगी जो बहुत से वंशों का पिता होगा (16:10, 11)। हैरानी की बात यह है कि परमेश्वर के अनुग्रह ने उसे देखने के सक्षम किया और वह फिर भी जीवित रही, हाजिरा ने "यहोवा के नाम को पुकारा" (16:13)।

बाइबल के पूरे इतिहास में, परमेश्वर के लोगों ने पथ पर आत्मिक घुमाव लिए जो उन्हें परमेश्वर से दूर ले गए और उनके जीवनों को खतरे में डाल दिया। ऐसे समयों में, परमेश्वर ने हमेशा ही उन्हें बुलाया - जैसे उसने हाजिरा को बुलाया - एक अलग "मार्ग" דֶּרֶךְ *(डेरेक)* लेने के लिए और उस पथ पर चले जो परमेश्वर की ओर मुड़ता है (16:7-9)।

जब परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से बाहर लाया, उसने लोगों की रात में आग के खम्भे और दिन में बादल के खम्भे से अगुआई की, उनको "उस पथ पर लेकर चला [डेरेक]" जो लाल सागर से जाता था (निर्गमन 13:17, 18; देखें 14:19, 20)।

उसके बाद, इस्राएली सीनै पर्वत की ओर गए, जहाँ उन्होंने दस आज्ञाओं की वाचा को प्राप्त किया जो उन्हें परमेश्वर के आत्मिक "पथ" पर चलना सिखाएगी (डेरेक; व्यव. 5:33), उसका पथ उन्हें मृत्यु की बजाए जीवन की ओर ले जाता (व्यव. 30:19, 20)। परन्तु वे "बड़ी शीघ्र ही परमेश्वर के पथ *(डेरेक)"* से हटकर मूर्तिपूजा की ओर चले गए (निर्गमन 32:8)। आत्मिक घुमाव के भीषण परिणाम थे: परमेश्वर के साथ संगति खोने का नुकसान, उनके मन्दिर और जाति का विनाश, और प्रतिज्ञा के देश से निकाला जाना। मूसा ने इस तरह के विनाश से उनको सावधान किया था (व्यवस्थाविवरण 29:24-30:1); फिर भी उसने उनके बने रहने की सम्भावना भी दी कि परमेश्वर उन पर दया करेगा और उनको बंधुआई से छुड़ाकर उनको अपने देश में वापिस लाएगा यदि वे पश्चाताप करते हैं और परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं (व्यव. 30:2, 3)।

बाद में, नबी ने लोगों से विनती की कि वे अपने आत्मिक घुमाव से मुड़ जाएँ और वापिस परमेश्वर की ओर और उस देश में आ जाएँ जो पहले कभी इस्राएल का था। यशायाह ने निम्न शब्दों में बुलाहट को ज़ारी किया:

> और वहां एक सड़क अर्थात् राजमार्ग होगा [*डेरेक*]
> उसका नाम पवित्र मार्ग [*डेरेक*] होगा;
> कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने पाएगा;
> वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग [*डेरेक*]
> पर जो चलेंगे वह चाहे मूर्ख भी हों तौभी कभी न भटकेंगे ...।
> परन्तु छुड़ाए हुए उस में नित चलेंगे,

और यहोवा ने छुड़ाए हुए लोग
लौटकर जयजयकार करते हुए
सिय्योन में आएंगे ...
(यशा. 35:8-10; देखें 40:3-5; 43:19; 55:7-9)।

उपसंहार: परमेश्वर की ओर वापसी का मार्ग। नए नियम में, "यीशु मसीह का सुसमाचार" (मरकुस 1:1) का आरम्भ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के प्रचार से आरम्भ होता है, जिसको परमेश्वर ने सब लोगों को मन फिराने का सन्देश देने के लिए चुना था। यूहन्ना का कार्य प्रभु के लिए "मार्ग [ὁδός, *होडोस]* तैयार करना, और उसकी सड़कें सीधी करना था" (मरकुस 1:3)। उसने ऐसा "पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने" के द्वारा किया (मरकुस 1:4) और लोगों को यीशु की ओर यह संकेत करके किया, "यह परमेश्वर का मेमना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29)।

बाद में क्रूस की छाया में, यीशु ने अपने शिष्यों से अपने जाने की बात कही। वे असमंजस में पड़ गए और नहीं जानते थे कि वह उन्हें क्यों छोड़कर जा रहा है और वे उसके पीछे क्यों नहीं आ सकते (यूहन्ना 13:36, 37)। यूहन्ना 14 में यीशु उन पर यह प्रकट करता है कि वह अपने "पिता के घर" (स्वर्ग)" जा रहा है ताकि उनके लिए "स्थान तैयार करे," और फिर वह कहता है कि वह वापस आकर उनको वहां ले जाएगा (यूहन्ना 14:2, 3)। फिर यीशु यह कहकर उन्हें आश्चर्य में डाल देता है, "जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग *[होडोस]* जानते हो" (यूहन्ना 14:4)। थोमा कहता है, "हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जाता है तो मार्ग *(होडोस)* कैसे जानें?" यीशु ने उस से कहा, "मार्ग *[होडोस]* और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:5, 6)। जबकि अनेक अलग-अलग मार्ग लेना चाहते हैं, पर यीशु ही एकमात्र सच्चा मार्ग है, अर्थात परमेश्वर, स्वर्ग और अनंत जीवन का पथ या सड़क। आरम्भिक मसीहियों को "मार्ग *[होडोस]"* कहा जाता था (प्रेरितों 9:2; 22:4; 24:14)। पिता के घर के लिए मसीह ही सच्चा और एकमात्र मार्ग है (देखें लूका 15:11-32)।

समाप्ति नोट्स

[1]उत्पत्ति 16:3 में दिए गए विवरण के अनुसार, इस समय अब्राहम पचासी वर्ष का था और सारा पचहत्तर वर्ष की थी। (अब्राहम की आयु के लिए देखें 12:4 जब उसने हारान को छोड़ा था और उन दोनों की आयु में अन्तर के लिए 17:17 देखें।) [2]हरमन्न जे. अस्टल, "שִׁפְחָה," *TWOT* में, 2:947. [3]थियोफिल जे. मीक, ट्रांस., "रियल एडॉपशन," इन *एशियंट नीयर ईर्स्टन टैक्सटस रिलेटिंग टू दि ओलड टैस्टामेंट*, 3डी एड., जेम्स बी. प्रिचार्ड (पिंसटन, एन.जे.: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1969), 220. इस प्रचलन के अन्य उदाहरणों के लिए, देखें विक्टर पी. हैमिल्टन, *दि बुक ऑफ जेनिसिसः चैप्टर 1-17*, दि इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन दि ओलड टेस्टामेंट (ग्रैण्ड रेपिडस, मिश.: डब्लयू एम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1990), 444. [4]उत्पत्ति 3:17 कहता है कि "आदम ने हव्वा की बात सुनी।" [5]हैमिल्टन, 446. [6]अपने पाप का अंगीकार करने की बजाए, दोनों

ही आदम और हव्वा ने उत्पत्ति 3:12, 13 में अपने अपराध कि किसी न किसी तरह दूसरे पर लगाने का प्रयास किया। [7]*दी कोड ऑफ़ हम्मुरबी* 146. [8]लिनार्ड जे. कोप्पेस, "עָנָה," *TWOT* में, 2:682. [9]देखें 16:7, 9-11, 13; 22:11, 12, 15; 31:11, 13; 32:24, 28, 30; निर्गमन 3:2, 4; न्यायियों 6:12, 14, 22; 13:6, 9, 22. [10]फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *ए हिब्रयू एण्ड इंगलिश लैक्सिकोन ऑफ ओलड टेस्टामेंट* (ऑक्सफोर्डः क्लेरेंडॉन प्रैस, 1962), 825.

[11]अनुवाद में यह एक असंगति है। इश्माएल से सम्बधित नबूवत और 16:12 में उसके भाई बन्धु और इसका पूरा होना 25:18 में उसी तरह से अनुवाद होना चाहिए। [12]दि आर सी वी और एन आर एस वी का समान अनुवाद है। [13]केन्नेथ ए. मैथ्यूस, *जेनेसिस 11:27-50:26,* दि न्यू टेस्टामेंट कमैंटरी, वाल. 1बी (नैशविलः ब्रॉडमैन एण्ड होलमन पबलिशर्स, 2005), 192. [14]पिता की सम्पति से विरासत पाने के लिए दासी से जनमे पुत्र को पिता के द्वारा स्वीकार किया जाना था। (*हम्मुरबी की व्यवस्था* 171.)